चित्रःगूगल से साभार

मां की पीड़ा

ये कहानी है दो मांओं से जुड़ी,
दोनों की जिंदगी थी दुखों से भरी।
बड़े जतन से अपने बच्चे की परवरिश किए,
अच्छी शिक्षा और संस्कार दिए।
कितनी खुश थी वो मां, अपने बेटे को देख,
जब वर्दी पहन दोनों घर को गए।
झूम रही थी वो, जैसे घर में त्योहार हो,
सारे दर्द उनके एक पल में मिट गए।
पर, किस्मत ने एक मां को छला,
एक का बेटा देशभक्त, तो दूसरे का देशद्रोही बना।
एक बेटे ने मेडल तो दूसरे ने हथकड़ी पहना,
वक्त ने उस मां को खौफ दे दिया।
एक मां के दिल में था सुकून, दूसरी मां का दिल था दर्द से भरा,
ऊपरवाले ने ये कैसा फैसला किया?

वो दिन था अजब, दोनों मां थी बेसुध पड़ी,
दो बेटों की लाशें थी आंगन में पड़ी।
एक को सीमा पर गोली लगी, दूसरे को फांसी पड़ी,
एक शव तिरंगे से लिपटी तो दूसरी थी काले कपड़े से ढंकी।
छिन गया बुढ़ापे का सहारा, टूटा अरमान सारा,
इस दर्द में वो जीते-जी मर गई।
इस वक्त भी दुनिया ने ढाए सितम,
एक मां को सहानुभूति तो दूसरे को ताने दिए,
क्या गुनाह था उस मां का ये तो बता?
मां के कोख को दुनिया था कोस रहा,
पत्थर मार कर उन्हें घायल कर रहा।
न चाहत रही उनमें जीने की अब,
अपने किस्मत पे रो, घुट-घुटकर मर गई।
न रोनेवाला कोई, न कंधा दिया,
बेमन से लोगों ने मिट्टी में दफन कर दिया,
उस कहानी को वही पर खतम कर दिया।

सृष्टि मिश्रा
सुपौल (बिहार)